बावा भानू जी वन्दना

वन्दना

प्रथम सतगुरु सिमरके, धंरू गौरीसुत ध्यान
इष्ट-देव, कुल-देवता, करो नाथ कल्याण ॥

आसन मेरा शुद्ध करो, हरो शोक सन्ताप ।
रखो संगल से बांधकर, राक्षस भूत पिशाच ॥

सुन्दर मन्दिर सजिया, रखा सिंघासन थाप ।
जगमग जगमग दीप जगे, आन बिराजो आप ॥

पुष्प भभूति आरती, खिचड़ी पड़ी तैयार ।
अब तो बावा भानू जी, देवो खोल द्वार ॥

कोई लावां, मुण्डन करें, करे नाम - संस्कार ।
हाथ जोड़ कर सब खड़े, दाता के दरबार ॥

धागा तेरे नाम का, बंधा सभी परिवार ।
हे कुलदेवता कुल को, देवो आज दीदार ॥

नाथ सदा ही रखना, निज चरणों के पास ।
दुःख, संकट, पीड़ा हरण, हर लेना यम त्रास ॥

दास 'मधुप' की बेनती, यही आस अरदास ।
करदो पूर्ण कामना, कर दो कारज रास ॥

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण **'मधुप'** (मधुप हरि जी महाराज) (महोत्रा महाजन) अमृतसर (9814668946)

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/36926/title/Bava-Bhanu-ji-vandana

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |